Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain college, Ara.

Notes For:- B.A- part-III, paper-V

Topic - मुगल राजनीति पर नूरजहाँ का प्रभाव :- जहाँगीर के शासन की सर्वप्रमुख घटना है, उसका नूरजहाँ से 1611 ई० में विवाह होना। नूरजहाँ के साथ विवाह का जहाँगीर पर विशेष प्रभाव पड़ा। उसके रूप और गुणों पर आकर्षित होकर धीरे-धीरे जहाँगीर ने उसे अपना सबसे विश्वसनीय सलाहकार बना लिया।

नूरजहाँ एक सुंदर और प्रतिभावान महिला थी। वह सुसंस्कृत विचारों और कलात्मक गुणों से परिपूर्ण थी। उन्हें कविता, संगीत एवं चित्रकला में विशेष रुचि थी। फारसी में वह स्वयं कविता करती थी। उन्हें नए-नए फैशन, वस्त्र, आभूषण, शृंगार के साधनों, इत्र इत्यादि के आविष्कार का शौक था। उसने फारसी परम्परा पर आधारित अनेक नए फैशनों को चलाया। उसके प्रभाव के कारण राजदरबार में फारसी कला एवं संस्कृति की प्रतिष्ठा बढ़ी। वह गरीबों और असहायों की सहायता करती थी। उसने अनेक निर्धन और अनाथ कन्याओं का विवाह अपने खर्च से करवाया। उनके इन कार्यों से साम्राज्य में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी और उन्हें सभी का प्रेम प्राप्त हुआ।

जहाँगीर की अपने प्रति आसक्ति को देखकर नूरजहाँ ने अपने समर्थकों का एक दल बना लिया। इस समय से लेकर जहाँगीर की मृत्यु तक शासन की वास्तविक बागडोर नूरजहाँ और उसके समर्थकों के हाथों में ही रही। फलस्वरूप, नूरजहाँ के विरुद्ध प्रतिक्रिया आरंभ हुई और साम्राज्य को शाहजहाँ और महावत खाँ का प्रबल विरोध झेलना पड़ा।

→

इसके दूरगामी परिणाम निकले। जहाँगीर की कृपा प्राप्त कर वह शासन और राजनीति में महत्वपूर्ण दखल देने लगी। वह जहाँगीर पर विशेष ध्यान देती थी। वह उसके साथ शिकार पर भी जाती थी। वह सम्राट के साथ बराबर रहती थी। प्रजा को झरोखा दर्शन भी देती थी। उसने जहाँगीर को सुख एवं शांति देने का प्रयास किया। नूरजहाँ के प्रभाव के कारण जहाँगीर ने मद्यपान कम कर दिया एवं कला-कौशल को भी प्रश्रय दिया। जहाँगीर, नूरजहाँ पर पूरी तरह आश्रित हो गया।

जहाँगीर के साथ विवाह होने के पश्चात् मुगल राजनीति एवं दरबार में नूरजहाँ एवं उसके संबंधियों का प्रभाव बढ़ गया। उनके पिता 'एतमादुद्दौला' और भाई आसफ खाँ दरबार के सबसे प्रभावशाली सरदार बन गए। आसफ खाँ ने अपनी पुत्री अर्जुमंद बानू बेगम से शाहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) का विवाह कर अपनी स्थिति और सुदृढ़ कर ली। इस विवाह के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रो० बेनी प्रसाद ने मत व्यक्त किया है कि इस विवाह के परिणामस्वरूप नूरजहाँ, एतमादुद्दौला, आसफ खाँ और युवराज का गुट तैयार हुआ। जिसने अगले 10 वर्षों तक साम्राज्य पर शासन किया। नूरजहाँ गुट अथवा 'नूरजहाँ जनता' जिसमें उनकी माता भी शामिल थी, अगले 10 वर्षों तक परस्पर सहयोग और विश्वास के साथ कार्य करता रहा। इस गुट के सभी व्यक्ति योग्य और कर्मठ थे।

1611-22 तक नूरजहाँ ने अपने माता-पिता की सलाह और निर्देश पर राजनीति की, लेकिन 1622-27 ई. के बीच नूरजहाँ को अनेक कठिनाईयां उठानी पड़ी। आरंभ में नूरजहाँ ने जहाँगीर को प्रभावित कर अपने सगे संबंधियों को ऊँचे पदों पर नियुक्त करवा दिया। उसका पिता प्रमुख दीवान और भाई खान-ए-सामाँ (सामां) नियुक्त किए गए।

→

→ अन्य लोगों को भी प्रशासन में उच्च स्थान दिए गए। स्वयं नूरजहाँ का भी कुछ सिक्कों पर खुदवाया गया, जिससे उसका शासन और जहाँगीर पर प्रभाव परिलक्षित होता है।

मेहरुन्निसा, नूरजहाँ की वास्तविक नाम

ये प्रसिद्ध ईरानी अमीर मिर्जा ग्यास बेग की पुत्री थी। मिर्जा ग्यास बेग नौकरी की तलाश में अपने परिवार के साथ भारत आया था। अकबर ने उसकी योग्यता, तीव्र बुद्धि एवं कार्य-कुशलता को देखते हुए मुगल प्रशासन में उसे स्थान दिया। धीरे-धीरे मिर्जा ग्यास बेग दरबार में अपना प्रभाव बनाने में सफल हुआ। जहाँगीर ने उसे 'ऐतमादुद्दौला' का खिताब दिया। मेहरुन्निसा की परवरिश मुगल दरबार में होती रही। जहाँगीर के शासनकाल में जब खुसरो ने विद्रोह किया, तो ऐतमादुद्दौला ने उसकी सहायता की, जिसका दण्ड भी उसे भुगतना पड़ा। परंतु बाद में उसे उसका पद पुनः वापस दे दिया गया। इधर मेहरुन्निसा (नूरजहाँ) जब सयानी हुई, तो उसका विवाह अली कुली बेग इस्तजलू नामक ईरानी से, जो मुगल सेना में था, कर दिया गया। अली कुली एक वीर और साहसी व्यक्ति था। उसे जहाँगीर ने 'शेर अफगान' की उपाधि प्रदान की थी। शेर अफगान ने जहाँगीर के विद्रोह के समय जहाँगीर का साथ नहीं दिया था, तथापि शासक बनने के बाद जहाँगीर ने उसे बंगाल में एक जागीर (बर्दवान) देकर भेज दी। बंगाल में इस समय अशांति थी। अफगान सरदार, स्थानीय शासक और जमींदार, उत्पात मचाए हुए थे। बंगाल की स्थिति पर नियंत्रण रखने के लिए वहाँ के सूबेदार मानसिंह को हटाकर, कुतुबुद्दीन खाँ को सूबेदार बनाया गया। उसे शेर अफगान पर नजर रखने और आवश्यक होने पर दण्ड देने। उसे आगरा भेजने का निर्देश

दिया गया। कुतुबुद्दीन शेर अफगान की धृष्टता से क्रुद्ध था। उसे दण्ड देने के उद्देश्य से वह बर्दुमान पहुँचा। कुतुबुद्दीन ने शेर अफगन को गिरफ्तार/पकड़ने की कोशिश की, जिस पर क्रुद्ध होकर शेर अफगन ने कुतुबुद्दीन की हत्या कर दी। शेर अफगन को कुतुबुद्दीन के सिपाहियों ने मार डाला। यह घटना अप्रैल-1607 में घटी। शेर अफगन की हत्या के पश्चात् मेहरुन्निसा को जहाँगीर ने आगरा बुलवा लिया, जहाँ उसके पिता और भाई दरबार में उच्च पदों पर आसीन थे। मेहरुन्निसा और उसकी पुत्री लाडली बेगम को अकबर की विधवा सलीमा बेगम की सेवा में नियुक्त कर दिया गया।

मेहरुन्निसा अनेक वर्षों तक मुगल हरम में रही। मार्च 1611 ई० में नौरोज के त्योहार के अवसर पर मीना बाजार में जहाँगीर की नजर मेहरुन्निसा पर पड़ी। उसकी सुंदरता से जहाँगीर अत्यंत प्रभावित हुआ। उस पर मोहित होकर उसने मई 1611 ई० में मेहरुन्निसा से विवाह कर लिया एवं उसे नूर महल और नूरजहाँ की उपाधि प्रदान की। यह विवाह अत्यंत राजनीतिक महत्व का था। इस विवाह के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रो० बेनी प्रसाद ने विचार व्यक्त किया है कि जहाँगीर की शासन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना, जिसने ध्यान आकृष्ट किया है वह है उसका नूरजहाँ से विवाह। अगले 15 वर्षों तक यह महिला साम्राज्य की सबसे अधिक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली ताकत बनी रही।